शिक्षा में अवरोधन के कारण (Causes and Remedies in Education) →

पहली कक्षा में अवरोधन काफी अधिक है तथा इसके बाद की कक्षाओं में कुछ कम है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में अवरोधन अधिक है। कक्षाओं में छात्रों को अनुत्तीर्ण होने की प्रतिशत संख्या इतनी अधिक होने के लिए अनेक कारण उत्तरदायी है। इन कारणों को भी शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य सम्बंधी समूहों में बाँटा गया है।

शैक्षिक कारण (Educational Causes) → अवरोधन के लिए जिम्मेदार शैक्षिक कारकों के अन्तर्गत अनुपयुक्त पाठ्यक्रम, कक्षा के छात्रों की आयु में विषमता होना, उपस्थिति में अनियमितता, अनुपयुक्त शिक्षण विधियाँ, सहायक सामग्री का अभाव, कक्षा में अधिक छात्रों का होना, दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली तथा स्कूल में वर्ष भर प्रवेश का खुला रहना प्रमुख है। अतः अवरोधन की मात्रा को कम करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि छात्रों के मानसिक विकास के अनुरूप पाठ्यक्रम बनाया जाये, कक्षा में लगभग एक समान आयु के छात्रों को रखा जाये, छात्रों को प्रतिदिन स्कूल जाने के लिए, प्रोत्साहित किया जाये, मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाए, आवश्यक सामग्री उपलब्ध करायी जाय, कक्षा में छात्रों की संख्या उचित हो, मूल्यांकन परीक्षा प्रणाली को लागू किया जाये।

Scanned with CamScanner

आर्थिक कारण (Economic Causes) → निर्धनता के कारण छात्रों के पास घर पर अध्ययन करने के लिए पुस्तकें व अन्य अध्ययन सामग्री का न होना तथा घरेलू कार्यों के कारण पढ़ाई के लिए समय न मिल पाना, दो ऐसे प्रमुख आर्थिक कारण है जो शैक्षिक अवरोधन को बढ़ाते हैं। इन कारणों को दूर करने के लिए छात्रों को पुस्तकें व अन्य अध्ययन-सामग्री मुफ्त में दी जानी चाहिए तथा छात्रों के माता-पिता को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे घर पर अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय दे सकें।

सामाजिक कारण (Social Causes) → सामाजिक कारणों से अल्पसंख्यक वर्गों एवं जनजाति व अनुसूचित जाति के बच्चों तथा उनकी शिक्षा को हेयदृष्टि से देखा जाना प्रमुख है। इसके अतिरिक्त लड़कियों की शिक्षा को हीनदृष्टि से देखना तथा अभिभावकों का अशिक्षित होना व शिक्षा को महत्व न देना भी प्रमुख कारण है।

भौतिक कारण (Physical Causes) → ग्रामीण क्षेत्रों, वन प्रदेश, पहाड़ी आदि क्षेत्रों से आने वाले छात्रों के घर व स्कूल से अधिक दूरी होने के कारण उनका काफी समय घर से स्कूल आने में निकल जाता है तथा वे काफी थक जाते हैं जिससे वे स्कूल में अपनी पढ़ाई नहीं कर पाते हैं।

Scanned with CamScanner

यह छात्रों को सही अर्थ में पढ़ाने या शिक्षित करने की चेष्टा नहीं करती है। कक्षाओं में उपस्थिति से इसके दोनों अभिप्राय और वर्तमान व्यवस्था का अन्त हो जाता है। नियमित उपस्थिति को सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने अनेक योजनाएँ बनायी है। जैसे - मध्याह्न की भोजन योजना और विद्यालय में 8वीं तक के छात्रों को अनुत्तीर्ण नहीं करना है। इससे विद्यालय छोड़ने वालों की दर में कमी आयी है तथापि शिक्षा की गुणवत्ता में कमी आयी है। विशिष्ट श्रेणी के पब्लिक स्कूलों में दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता खासकर ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों से प्रमाणित हो रही है।

शिक्षा एक विशेष लक्ष्य है और इस तरह से संस्थानों को उनके समर्पित शिक्षकों और प्रतिभाशाली योग्य छात्रों ने जीवन विभिन्न क्षेत्रों में स्थान बनाकर प्रतिष्ठित किया है। सरकार की दोषपूर्ण शिक्षा नीति के साथ सरकारी विद्यालयों में बुनियादी सुविधाओं का भी अभाव है। निजी विद्यालय बुनियादी सुविधाओं का उचित प्रबंध रखते हैं। सरकारी विद्यालयों में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकतम विद्यालयों में भवन और पाठ्यक्रम के अतिरिक्त सुविधाओं का अभाव होता है और कभी-2 शिक्षक भी नहीं होते हैं। दूसरी तरफ शिक्षा के निजीकरण से अक्षमता, भ्रष्टाचार, शिक्षक, उपकरण, प्रयोगशालाएँ और पुस्तकालयों

Scanned with CamScanner

जैसे मानवीय संसाधनों के अपर्याप्त उपयोग को दूर किया जा सकता है। जो अब हमारी शिक्षा पद्धति के अनिवार्य अंग बन गये हैं। लेकिन शिक्षा के निजीकरण का नकारात्मक पहलू भी है। शिक्षा के निजीकरण ने समाज के उच्च वर्गों के स्वार्थ के लिए अमीरों और गरीबों के बीच विषमता को बढ़ाने का काम किया है।